शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'गोदान' उपन्यास में कृषक की मनोदशा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

ममता वर्मा (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

साहित्य से समाज का संस्कार होता है तथा समाज के सृजन में उत्तेजना देता है। इस प्रकार दोनों का अटूट संबंध है। समाज का निर्माण पहले हुआ। समाज सामूहिक रूप में रचनाधर्मी नहीं होता। वह कुछ विशिष्ट वयक्तियों द्वारा उसे व्यक्त करता है। अतः जिस साहित्य का निर्माण होता है वह समाज के ही विचारों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में अभिव्यक्त करता है। मनुष्य की रचना में मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है। एक लेखक के लिए अपने पात्रों के मनोविज्ञान को समझना अत्यावश्यक होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'गोदान' उपन्यास में कृषक समाज के मनोविज्ञान का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है

भूमिका

समाज को अपने साहित्य में अभिव्यक्त करने के लिये जागृत साहित्यकार को समाज विज्ञान का परिचय होना चाहिए। प्रेमचंद सामाजिक विज्ञानों से अपिरिचित व्यक्ति को साहित्यकार नहीं मानते। इस संदर्भ में उनकी एक टिप्पणी दृष्टव्य है, "आज किसी प्रकार की तैयारी उसके लिये प्रवृत्ति मात्र अहम् समझी जाती है और किसी प्रकार की तैयारी उसके लिये आवश्यक नहीं। वह राजनीति, समाजशास्त्र या मनोविज्ञान से सर्वथा अपरिचित है, फिर भी वह साहित्यकार है।

रूप परिवर्तन तथा नव निर्माण , व्यक्ति की मौलिक ऐषणाओं की भांति समाज की भी मौलिक समस्यायें हैं। स्वभावतः इन समस्याओं के प्रति उदासीन हो जाना साहित्य और समाज के संबंधों की अविभिन्नता तथा अविरलता को भूल जाना है। इसीलिये श्रेष्ठ साहित्यकारों का हृदय हमेशा सामाजिकता से अनुप्राणित रहा है। तुलसीदास से अकबर या बीरबल या राणा प्रताप ने रामचरित मानस लिखने के लिये नहीं कहा था। न रूसो से किसी ने सो शल स्ट्रेक्ट लिखने को कहा था न मार्क्स से केपिटल। यह समाज ही था जिसने इन विचारों को इन लेखकों के हृदय में अनुप्राणित किया था। यदि समाज के हृदय में इन विचारों का अंकुर न होता तो समाज पर इन विचारों का प्रभाव भी न पड़ता। साहित्य एक सामूहिक चेतना है। उपर्युक्त विवेचन से सपष्ट है कि किसी समाज, राष्ट्र अथवा जाति को जीवित रखने के लिये , उसके सामाजिक संगठन को व्यवस्थित बनाने एवं सामाजिक प्रगति , संस्था, समुदाय, वर्गगत समस्याओं एवं भावनाओं के विस्तृत एवं सपष्ट विवेचन हेतु साहित्य अनिवार्य है।

'गोदान' में कृषक की मनोदशा

ग्रामीण जीवन के विषय में अन्य लेखकों ने भी लिखा है, किन्तु मुंशी प्रेमचंद का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। उन्होंने अपने लेखन कार्य में

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्राम्य जीवन का बहुत ही मार्मिक रूप से चित्रण किया है।

प्रेमचंद साहित्य स्वतंत्रता के पूर्व उस युग का साहित्य है, जब ग्रामीण व्यवस्था विभिन्न वर्णों में विभाजित थी, तथा किसान वर्णों के बीच पिस रहा था। अंग्रेजों ने दे श की व्यवस्था को अपने पक्ष में बनाये रखने के लिये जमींदारों तथा जागीदारों के रूप में मध्यस्थों को बनाये रखा था। जमींदार के मातहत कर्मचारियों की एक विस्तृत श्रृंखला होती थी। यह वर्ग अपने अधिकारो का प्रयोग करते हुए , किसानों का शोषण किया करता था।

'गोदान' भारतीयता के प्रतीक गाँवों के आ चार-व्यवहार तथा भावना को प्रस्तुत करता है। यह 1936 ई. के आास-पास का युग था जब भारतीय ग्रामीण धर्म की आड में होने वाले शोषण तथा अत्याचारों से स्तब्ध हो पूर्ण भाग्यवादी तथा परम्परानुगामी थे। अपने पर होने वाले प्रत्येक अत्याचार को पूर्ण कर्म तथा भाग्य का प्रतीक मानकर जीवन व्यतीत कर रहा था। इसके साथ ही नया किसान वास्तविकता से अवगत था। वह भारतीयता का तो सर्मथक था, किन्तु शोषण तथा अत्याचार का नही।

भारतीय कृषक अज्ञानता , अदूरदर्शिता तथा अशिक्षा का शिकार है। वह भोला तथा जल्दबाज होता है। उसकी अतार्किक नीति ही उसे निर्धन तथा ऋणग्रस्त बनाती है। शोष क वर्ग उसकी अज्ञानता से परिचित होता है। वह उसके मानसिक बोझ को पूर्वाग्रह तथा रूढीवादी प्रवृत्तियों देख कर उसका शोषण करता है , लहराती फसल के देखते ही किसान के पेट मे चूहे कूदने लगते हैं, फसल के घर मे आने के पूर्व ही कर्ज घर मे आ जाता है , तथा कर्ज के बदले में साहूकार सस्ते दामों में फसल ले लेता है। यदि दैविक आपत्ति के कारण फसल नष्ट हो जाती है तो किसान नष्ट हो जाता है।

ग्रामीणों की मनोवृत्ति पर टिप्पणी करते हुए प्रेमचंदजी ने लिखा है कि देहाती किसानों को पचास रुपये की चीज उधार दे दीजिए तो वह बिना यह सोचे कि मुझ में इस चीज को खरीदने की योग्यता है या नही फौरन मोल ले लेता है और फिर किसी न किसी तरह से रो -धो कर उसकी कीमत अदा करता है। किसान अपनी माली हालत से बिल्कुल बेखबर होता है उसमे दूरदर्शिता नही होती।

प्रेमचंद का विचार है कि किसानो की हीन द शा से पूँजीपति लाभ उठाना छोड देगा यह धारणा व्यर्थ है। यह तो वैसा ही है , जैसे कुत्ते से चमडे की रखवाली करने की आ शा की जाये। इस अन्याय एवं अत्याचार से जो समाज में शोषण, ईर्ष्या, विषमता को उत्पन्न करता है, प्रेमचंद सख्त घृणा करते थे और इसीलिये इस मनोवृत्ति को उत्पन्न करने वाली प्रवृत्ति का उन्होंने विरोध किया है। वे जानते थे कि औद्योगीकरण के कारण हडताल और संघर्ष होंगे तथा समाज उससे प्रभावित होगा। पूंजीपतियो को सस्ते मजदूर मिल जाएंगे किंतु श्रमिकों का हित नही होने पाएगा। युग की आर्थिक मंदी के परिणामस्वरूप कृषि संबंधी ऋण बढ़ने लगा। गोदान का कृषि पर आधारित प्रत्येक पात्र ऋणी है।

होरी की मौत हिन्दी साहित्य की सबसे करूण मौतों मे से एक है। गोदान की प्रसिद्धि और महानता में होरी की मृत्यु की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में यह बात गौर करने लायक है कि आमतौर पर किसान की मौत या तो किसी संक्रामक बीमारी से होती है या अत्यधिक शारिरिक यंत्रणा या हत्या के कारण। होरी किसान के अपने परिवार का जीवन पांच

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बीघे खेत पर टिका है, जो कवल इतना देती है कि उससे जिया जा सके। गोदान के पहले ही अध्याय मे हमें होरी की सामाजिक , आर्थिक हैसियत के साथ-साथ उसके स्वास्थ्य और चरित्र का पता लग जाता है।

होरी गरीब है, लेकिन गरीब आदमी के मन में भी आकांक्षायें होती हैं। होरी जिस समाज में रहता है, उसमें किसान सम्मानित व्यक्ति माना जाता है। उसे अपनी 'मरजाद, की परवाह करनी पडती है। मरजाद के लिए अपने दरवाजे पर एक गाय देखना चाहता है। उसकी इस आकांक्षा का पता उपन्यास के आरंभ मे ही चल जाता है , यह आकांक्षा उसके जीवन के अंत तक बनी रहती है। मरते वक्त भी होरी के मन में गाय की लालसा रह जाती है।

होरी मौत के मुंह में जाने से कब तक बचता। उसे 'रामसेवक, के रूपये भी तो अदा करने थे। दूसरी का कर्ज भी तो चुकाना था। उसके लिए असल उद्देश्य तो यह था कि इस साल इन ऋण से गला छूट जाय, तो दूसरी जिन्दगी शुरू हो। " होरी जिस तरह की जिन्दगी जी रहा था , उसमें यह सब होना ही था, वह जब भी अपनी स्थिति बदलने की कोशिश करता, उसे अपनी जान दाव पर लगानी ही पडती। जिस खेती पर उसका परिवार आश्रित था, वह इतनी पर्याप्त हो भी नही सकती थी कि पेट पालने के बाद कर्ज से मुक्ति भी दिला दे। इसलिए धनिया इस डर के बाद भी कि कहीं होरी बीमार न पड जाय, उसे काम करने से नही रोक पाती। होरी काम पर चट-पट जा पहुँचा था।

किसान अपने खेत में अत्यधिक श्रम करने के कारण नही मरता। अगर गोदान पर नजर डालें तो होरी अपने जीवन में तीन बार मृत्यु का सामना करता है। पहली बार तब जब अपने अलावा पुनिया के खेत को भी संभालने लगता है। और फसली बुखार की चपेट में आ जाता है। दूसरी बार तब जब दातादीन के खेत में खाली पेट मजदूरी करते हुए वह बेहो श हो जाता है और उसकी देह ठंडी पड जाती है। तीसरी बार जब गर्मी की तपती दोपहरी में वह दि हाड़ी पर कंकड खोदने का काम करता है और उसे लू लग जाती है। इस बार होरी नही बच पाता। अपने खेत में किसान चाहे जितना भी परिश्रम करता हो, लेकिन श्रम करने की स्थितियों और क्षमता को ध्यान मे रखकर करता है। गोदान में पाँच बीघे के एक औसत किसान के रूप में अपना जीवन शुरू करने वाला होरी अपनी खेती , मर्यादा और चैन गवा देता है। किसान से मजदूर बनने की प्रक्रिया होरी के लिए इतनी तकलीफदेह है कि अंतिम समय में उसके मन मे ओर जीने की कामना नहीं रह जाती। उसके बाद उसके आखिरी शब्द 'रो मत धनिया' अब कब तक जिलाएगी ? तब दुर्दशा ना होगी, अब मरने दे।

प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से किसा नों पर अत्याचार करने के लिए किस तरीके से पूंजीपति, जमींदार तथा अंग्रेज सरकार सब एक हो जाते हैं। उनके जमाने में किसान मजदूर इतने संगठित नहीं थे। जितने की आज है और उनमें एक नई चेतना अंकुरित हो रही है। ग्रामीण समाज को प्रेमचंदजी ने अपनी आखों से देखा था। उसका वर्णन पिष्टपेषण मात्र न होकर पूर्ण मौलिकता लिये हुए है। मुंशी जी स्वयं गाँवों मे रहे थे।

प्रेमचंदजी के कथा साहित्य में किसान पात्रो की मृत्यु के बहुत प्रसंग आए हैं। उनकी मौतें संख्या ही नही प्रभाव की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। किसान पात्रों की मौत का कारण अंततः उनकी गरीबी ही होती है। प्रेमचंद के पात्र इतने सीधे ,

सरल और निरीह हैं कि अपनी ओर से वे किसी से झगडा मोल नही लेते , किसी का बुरा नही चाहते। इसके बावजूद जैसी सारी व्यवस्था ही उनकी दुश्मन होती है।

निष्कर्ष

गोदान प्रेमचंद का अंतिम तथा सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास है। इसमें शहर भी है और गांव भी लेकिन मूल कथा होरी की ही है। उपन्यास एक गरीब किंतु संतुष्ट किसान होरी के जीवन के एक सामान्य से दिन से शुरू होकर दरिद्र कमजोर और मजदूर होरी की मौत के साथ खत्म हो जाता है। प्रेमचंद के उपन्यास गोदान में ग्रामीण कथा में होरी का पूरा संसार , उसके जीवन से लेकर उसकी मौत का एक मार्मिक वर्णन है। प्रेमचंद ने साहित्य को न केवल ग्रामीण जीवन से जोड़ा, जीवन और साहित्य के द्वंदात्मक संबंधो के पहचानने के कारण साहित्य को जीवन के बदलाव में लाने वाली एक शक्ति के रूप में भी देखा। प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में ग्राम्य जीवन और उससे जुडी हुई बहुत सी बातों का कलात्मक रूप से उपयोग किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ.राजपाल शर्मा, गोदान : पुनर्मूल्यांकन, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली

2 डॉ. सतीश दुबे, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद साहित्य, साहित्य संस्थान 10, 660 उत्तरांचल कॉलोनी, लेनी बार्डर गाजीयाबाद